# शैलेश मटियानी के कथा-साहित्य में 'सार्वदेशिकता'

**मीनू जोशी ***

**सारांश**

'अंचल' का रहन–सहन भाषा–बोली, प्राकृतिक सौन्दर्य रचना को आंचलिक बनाता है। ठीक उसी प्रकार रचना में समाज के किसी वर्ग अथवा सामाजिक समस्याओं का आंकलन साहित्य को सार्वदेशिक बनाता है।

कथाकार शैलेश मटियानी की रचनाओं में आंचलिकता है ही साथ ही 'सार्वदेशिकता' भी पर्याप्त है। मटियानी का जन्म अल्मोडा के बाड़ेछीना ग्राम में हुआ। बाल्यकाल से ही विषम–परिस्थितियों से जूझते हुए समाज की उलाहना व अपेक्षा से त्रस्त होकर वे घर से भाग गये। हिमालय की ऊँची चोटियों से सागर की तलहटी तक कई छोटे बड़े शहरों में भटकते हुए उन्होंने समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं को स्वयं देखा व भोगा। जिसकी स्पष्ट अभिव्यक्ति उनके साहित्य में मिलती है।

**मुख्य शब्द**– मटियानी, शैलेश, स्त्री, कहानियाँ, उपन्यास, कथा–साहित्य, दलित, सामाजिक, संघर्ष।

'सर्वादेशिक अर्थात् सब देशों से संबद्ध, या यूं कहें कि जो सर्व समाज से संबंधित हो। वाड़मय अथवा साहित्य में वह घटना, स्थिति, समस्या, पीड़ा, वातावरण, रहन–सहन, भाषा आदि, का विश्लेषण अथवा चित्रांकन जो समाज से सीधा संबंध रखता हो, वह साहित्य 'सार्वदेशिक' कहा जा सकता है। साहित्य में किसी रचना को आंचलिक तभी कहा जा सकता है जब उसमें किसी 'अंचल' विशेष या 'क्षेत्र' विशेष के समाज, वातावरण, रहन–सहन, भाषा आदि का चित्रण हो, यथा आचार्य नन्द दुलारे वाजपेई कहते हैं, ''आंचलिक उपन्यास हम उसे कहते हैं, जिसमें अपरिचित भूमियों और अज्ञान जातियाँ के जीवन का वैविध्यपूर्ण चित्रण हो। आंचलिक उपन्यास की सबसे प्रमुख विशेषता अपरिचित और किसी हद तक आदिम जातियों के जीवन–चित्रण में पाई जाती है।[1]'' अतः कहा जा सकता है कि साहित्य की वह रचना जिसमें सामाजिक समस्याओं अथवा समाज के किसी वर्ग की पीड़ा, रहन–सहन, स्थिति, घटना आदि का आंकलन सामाजिक दृष्टिकोण के आधार पर किया जाय, वह साहित्य सर्वादेशिक होगा।

कथाकार मटियानी की रचनाओं में आंचलिकता तो निहित है ही, साथ ही सार्वदेशिकता भी पर्याप्त है। उन्होंने समाज के हर भिज्ञ–अनभिज्ञ पहलू को कथ्य विषय बनाकर समाज में व्याप्त समस्याओं को उजागर किया है, उन्हें वाणी दी है। शैलेश मटियानी का जन्म अल्मोड़ा के बाड़ेछीना ग्राम में हुआ। बाल्यकाल में ही विभिन्न विषम परिस्थितियों से गुजरने के पश्चात वर्ष 1951 में हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण कर वे परिवार व समाज की उलाहना व उपेक्षा से त्रस्त होकर घर से भाग गए। उनका जीवन अत्यन्त संघर्षपूर्ण रहा। मटियानी हिमालय की ऊँची चोटियों से सागर की तलहटी तक कई छोटे–बड़े शहरों में भटकते रहे। जहाँ उन्होंने समाज के सभी वर्ग, धर्म, समुदाय के लोगों के जीवन संघर्ष को अत्यन्त सूक्ष्मता से देखा व जिया। जिसका स्पष्ट प्रभाव उनके कथा–साहित्य में दीखता है जो मटियानी की रचनाओं को सर्वादेशिक बनाती है। मटियानी जी के कथा–साहित्य में व्याप्त सार्वदेशिकता को हम उनकी रचनाओं में उद्घाटित मुख्यतः स्त्री–विमर्श, दलित–विमर्श व सामाजिक यथार्थता के आधार पर मूल्यांकित कर सकते हैं।

**स्त्री–विमर्श** :– शैलेश मटियानी के कथा–साहित्य में स्त्री–विमर्श मुख्य केन्द्र रहा है। उन्होंने समाज के हर वर्ग में नारी की स्थिति, संघर्ष व समस्याओं का यथार्थ रूप में चित्रण किया है। यथा गोपुली–गफरन' उपन्यास में कुमायूँ अंचल की निम्नवर्गीय समाज में उपेक्षित, अभावग्रस्त संघर्षशील, नारी के जीवन की विषम–परिस्थितियों को गोपुली के माध्यम से चित्रित किया है। गोपुली का पति रतनराम फौज में भर्ती होने के पश्चात् लापता हो जाता है। असहाय, बेबस, लाचार, भुखमरी से त्रस्त गोपुली मात्र अपने जीवन यापन हेतु धर्मान्तरण कर गोपुली से गफूरन बन सिद्दू मियाँ से विवाह कर लेती है। समाज से तिरस्कृत, विवश व आर्थिक विपन्नता के कारण गोपुली से गफूरन बनी स्त्री समाज के बदलते परिवेश का ही परिणाम है। स्त्री जीवन की विवशता व संघर्ष गोपुली के जीवन में तब उत्पन्न हो जाता है जब गोपुली का पति रतनराम वापस लौट आता है और गोपुली पर चरित्र हीनता का आरोप लगाता है। शैलेश मटियानी लिखते हैं कि, ''हम पहाड़ियों की गरीबी एवं बेरहमी की मारी जाने कितनी ही बेटियाँ कहाँ–कहाँ मारी फिर रही हैं– जो घरों में हैं, उनकी जिन्दगी बेशुमार तकलीफों से भरी है।[2]''

सामाजिक व आर्थिक विवशता के कारण वैश्यावृत्ति कर जीवन–यापन को मजबूर स्त्री की स्थिति को मटियानी जी ने अपने साहित्य में उद्घाटित किया है 'कबूतरखाना उपन्यास में बंबई अंचल में समाज के धनी वर्ग की विलासिता व

* शोधार्थी, हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग, डी0 एस0 बी0 परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल।

निर्धन वर्ग की विवशता को उद्घाटित किया है। त्रिभुवन रोड़ पर रहने वाले परिवार अपनी बहू–बेटियों के देह व्यापार से हुई कमाई से अपना घर चलाते हैं तो 'दो बूंद जल' उपन्यास की असहाय नायिका रेशमा को, भूख से त्रस्त भटकते हुए दिल्ली के कुतुबरोड स्थित वैश्यालय में मजबूरी वश, इस पेशे में आना पड़ता है। 'बोरीबली से बोरीबन्दर तक' उपन्यास में वेश्यावृत्ति को मजबूर स्त्री की सामाजिक स्थिति व पुरूष समुदाय की मूल्यहीनता को व्यक्त करते हुए लेखक लिखते हैं, ''नारी वस्तुतः साक्षात् दुर्गा, क्षमा, सुधा–धात्री है, फिर नारी माँ पहले हैं, उसे हम अपने हाथों कोठे पर बैठा आएं, उसे अपना जिस्म बेचने पर मजबूर कर दें, तो शरम नारी को क्यों ? शरम तो उन दैत्यों को आनी चाहिए जो बेशरम हो गए हैं।[3]''

'अर्द्धांगिनी' कहानी की नायिका सूबेदारनी अपने पति सूबेदार की अनुगामिनी है। कहानी में पति–पत्नी के आदर्श रूप को उद्घाटित करते हुए, दोनों की एक–दूसरे के प्रति आदर व सम्मान की भावना को अभिव्यक्त किया है। वहीं 'शीशे के पार उगी हरियाली' कहानी की नायिका सामाजिक अवहेलना व अपने पिता के मान–सम्मान की रक्षा हेतु अपनी इच्छाओं का परित्याग कर प्रेम–विवाह नहीं करती और आजीवन अविवाहित ही रहने का प्रण लेती है। कहानी के माध्यम से समाज में स्त्री की कुंठित मनःस्थिति को अभिव्यक्त किया है, ''उसमें तो शीशे ही शीशे हैं, और अलग–अलग शीशों में अपनी विवशता के बेशुमार प्रतिबिम्ब देखते रहने और थकने के बाद माथ टिकाए रो देने के अलावा और कोई स्थिति शेष नहीं।[4]'' 'कपिला' कहानी में बदलते सामाजिक मूल्यों की स्थापना की है। कहानी की नायिका पति की मृत्यु के पश्चात अनेक सामाजिक–संघर्षों व पारिवारिक अवहेलना को झेलते हुए अपने परिवार के पालन–पोषण की जिम्मेदारी स्वयं वहन करती है।

शैलेश मटियानी की छोटे–छोटे पक्षी, बावन नदियों का संगम, नर्मदा बेन, गंगूबाई, चंद औरतों का शहर आदि उपन्यासों तथा रूका हुआ रास्ता, उसने तो नहीं कहा था, लाटी, काला कौवा, कुसुमी, भौंरे की जात', आदि कहानियों में स्त्री की भिन्न–भिन्न सामाजिक स्थिति का आंकलन अनेक स्तरों पर मिलता है।

**दलित–विमर्श** :– शैलेश मटियानी ने समाज के लिए नासूर बनती कुप्रथाओं जैसे भेदभाव व छुआछूत जैसी समस्याओं को बेहद करीब से देखा व भोगा है। उन्होंने अपने कथा–साहित्य में दलित जातियों की सामाजिक, आर्थिक समस्याओं का वर्णन किया है। मटियानी ने अपनी रचनाओं में सामाजिक असमानता के विरूद्ध विरोध व्यक्त किया है।

'सतजुगिया' कहानी में सवर्णों द्वारा किये जाने वाले अत्याचार व उससे उत्पन्न भय से आतंकित दलितों की स्थिति को उद्घाटित किया है तो 'हत्यारे' कहानी में नेताओं द्वारा दलितों से की जाने वाली कुत्सित वोटों की राजनीति को चित्रित करते हुए लेखक ने 'सतजुगिया के पर्राम' व 'हत्यारे' के हरफूल चंन्द के माध्यम से दलितों पर किये जाने वाले अत्याचारों व सवर्णों के घिनौने व्यवहार के विरूद्ध विरोध व्यक्त कर समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का प्रयत्न किया है। ठीक उसी प्रकार 'नागवल्लरी' उपन्यास का 'नारायण' दलित जाति के उत्थान हेतु चिन्ता व्यक्त करता है, वह समाज में दलितों की अलग–थलक स्थिति को लेकर क्षुब्ध व आक्रोशित है। वह कहता है, ''अभी देखना, चाय पीने को मिलेगी तो बांकी सबके गिलास यह शख्स किरपाल ठाकुर खुद धोयेगा। मगर हम लोगों से उम्मीद करेगा कि गिलासों को खुद धोकर उलट रख दें और सूख जाने पर भी फिर अपने शुद्ध पानी से खंगाल दें।[5]''

सवर्णों में आये वैचारिक परिवर्तन भी शैलेश मटियानी की कहानियों में देखने को मिलता है –'चिट्ठी के चार अक्षर' कहानी की दलित पात्र दुर्गा, ठाकुर प्रताप से गर्भवती हो जाती है, सवर्ण जाति का ठाकुर प्रताप गाँव में तिरस्कृत व उपेक्षा के भय से दुर्गा को असहाय छोड़कर भाग जाता है, किन्तु जब प्रताप को अपनी गलती का अहसास होता है तो वह दुर्गा से क्षमा–याचना करते हुए विवाह करने की इच्छा जताता है। तो 'प्रेतमुक्ति' कहानी का दलित पात्र किसनराम मृत्यु पश्चात मोक्ष प्राप्ति हेतु पुरोहित केवल पांडे से तर्पण करवाना चाहता है। 'केवल पांडे' अपने वचन की रक्षा हेतु शास्त्र विरूद्ध जा कर मित्र किसन राम की अन्तिम इच्छा पूरी करता है। 'माँ तुम आओ' कहानी में गंगा देवी एक अनाथ शूद्र बच्चे का पालन अपने तीन बच्चों के साथ अत्यन्त वात्सल्य पूर्वक करती है।

शैलेश मटियानी ने बंदिश, परिवर्तन आदि कहानियों तथा 'हौलदार', 'एक मूठ सरसों', उत्तरकाण्ड' आदि जैसे उपन्यासों में दलितों की निम्न–सामाजिक स्थिति को उद्घाटित करते हुए उसके विरूद्ध आक्रोश व्यक्त कर दलितों के उत्थान व सामाजिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने का प्रयास किया है।

**सामाजिक यथार्थवादी दृष्टिकोण**

शैलेश मटियानी ने अपने साहित्य में समाज के मध्यम व निम्न वर्ग के जीवन की वैवाहिक आर्थिक, पारिवारिक, शैक्षिक व सामाजिक स्थिति आदि को अभिव्यक्त कर सामाजिक चेतना जागृत की है। यथा –

'अतीत' व असुविधा कहानियों में लेखक ने धन–वैभव, सुख–सम्पदा से परिपूर्ण होने पर भी तनाव व कुंठित मानसिकता से त्रस्त नायिका के असफल वैवाहिक जीवन का चित्रण किया है। 'कुसुमी' कहानी में विधवा स्त्री की मनोदशा को

उद्घाटित किया है। लेखक ने विधवा स्त्रियों का पुर्नविवाह कर रूढ़िवादी मानसिकता के प्रति विद्रोह व्यक्त किया है। पति की अकाल मृत्यु से दुःखी कुसुमी हमेशा पति की यादों में जीती है। वहीं, 'दीक्षा' कहानी की सवित्तरी बाल–विधवा है, आश्रयहीन व लावारिस सवित्तरी धर्मान्तरण कर मिस–गोम्स के आश्रम में रहती है। ''जिस तरह की भुखमरी और गलाज़तों से वह पिछले दिनों गुजर चुकी थी, उस भय ने जैसे किसी हिस्त्र जानवर की तरह उसे दबोच लिया था। वह बेहद डर गयी थी।[6]''

'चौथी मुठ्ठी' उपन्यास में लेखक ने बहुविवाह जैसी सामाजिक कुरीति एवं उसके दुष्परिणाम को दर्शाया है। रतन सिंह का तीसरा विवाह करवा कर उसकी पूर्व पत्नी कौशिला को घर से निकाल दिया जाता है। कौशिला न्याय हेतु गोल्ल देवता के मन्दिर में जाकर तीन मुठ्ठी चावल फेंक अपने अत्याचारी ससुराल वालों के अनिष्ट की कामना करती है। किन्तु चौथी मुठ्ठी हाथ में ही रख अपने फौजी पति के साथ किसी भी अप्रिय व्यवहार की कामना नहीं कर पाती और देवता से विनती करती है, ''लिली के बाबू को तो सुखी–संतोषी काया के साथ घर लौटा आना स्वामी ! परदेश में हैं, बेचारे पलटन की खतरनाक नौकरी में हैं। वहाँ तुम्हारे सिवा और रक्षा करने वाला ही कौन है।[7]''

'रामकली' उपन्यास में अनमेल विवाह की विसंगतियों को व्यक्त किया है। आर्थिक विपन्नता के कारण रामकली का विवाह उससे दो गुनी से अधिक उम्र के बासंता से करवा दिया जाता है। यौवनावस्था पा जाने पर रामकली बासंता के साथ रहने में कुंठित व हीन मानसिकता का अनुभव करती है और अपने पति को छोड़कर अमोलकचंद के साथ चली जाती है, जहाँ वह स्वयं को असुरक्षित व विपरीत परिस्थितियों में फंसा जानकर पुनः बासंता के पास आ जाती है।

'प्यास' कहानी का शंकरिया बंबई में मुर्दों की खरीद–फरोख्त कर और भीख मांग कर अपने लिए दो वक्त की रोटी जुटा पाता है। 'वापसी' कहानी में बाप–दादा के जमाने से कर्ज में डूबे धर्मवीर मास्टर की दयनीय आर्थिक स्थिति को व्यक्त किया है, जो पारिवारिक संघर्ष व सामाजिक मान प्रतिष्ठा के संरक्षण हेतु परिवार से दूर चला जाता है। ''लगातार सात वर्षों तक परदेश रह कर लौटने के बाद भी उसके और बंता साहू के बीच कर्जदार और साहूकार का पुराना रिश्ता अभी टूटा नहीं है।[8]'' तथा 'अहिंसा' कहानी में जगेसर आर्थिक रूप से अत्यन्त कमजोर व दयनीय स्थिति होने पर भी अपनी बीमार पत्नी का इलाज महानगर में जाकर करवाता है, किन्तु डॉ0 की लापरवाही से उसकी पत्नी बिन्ता की मृत्यु हो जाती है। जिससे क्षुब्ध व क्रोधित होकर जगेसर हिंसात्मक कदम उठा डॉ0 का गला काट हत्या कर देता है।

'एक कोप चा : दो खारी' बिस्कुट', इल्लेस्वामी विट्ठल, आदि कहानियों से शैलेश मटियानी ने बम्बई अंचल के फुटपाथों में भूख, गरीबी व उपेक्षा से त्रस्त जीवन–यापन करने वाले वर्ग की संघर्षशीलता, एकता, अपनत्व को उद्घाटित किया है। यथा ''तुम हमारे जिगर में, दिल में अपने लिए प्लेस क्रिऐट किया, पण, इसी को मिस फॉर्चून बोलते – जभी मनी था, तभी हम तेरे से उल्फत नहीं मांगा और आज तुम इश्क देने कू आया तो कबूतर का दाना भी खीसे में नहीं।[9]''

'पुरखा' घर–गृहस्थी, लीक जैसी कहानियों तथा 'दो बूंद जल', 'चिट्ठी रसैन', चौथी मुठ्ठी, उपन्यासों आदि में संयुक्त परिवार की संगठन शक्ति व एकता को व्यक्त करते हुए, विघटन से होने वाली विपरीत स्थिति को उद्धारित किया है। यथा, ''चारों बेटे एक–एक करके अपनी घरवालियों की पूँछ पकड़कर पूना, बम्बई, पटना चले गये हैं। सिर्फ खड़ी नमस्ते के अलावा और कोई चीज मुझे नहीं दी।[10]''

शैलेश मटियानी के कथा–साहित्य में समाज के भिन्न–भिन्न स्तरों में व्यक्त भूख, गरीबी, जीवन–संघर्ष, वैवाहिक स्थिति, पारिवारिक परिस्थितियाँ, सामाजिक स्थिति आदि का मानवीय संवेदना व भावनात्मक स्तर पर यथार्थ चित्रण, मटियानी की रचनाओं को स्वतः ही सार्वदेशिक बना देता है।

## निष्कर्ष

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मटियानी ने समाज के हर भिज्ञ–अनभिज्ञ पहलू को कथ्य विषय बनाकर समाज में व्याप्त समस्याओं को उजागर ही नहीं किया बल्कि उनका समाधान भी प्रस्तुत किया है। उन्होंने समाज के सभी वर्ग, धर्म, समुदाय के लोगों के जीवन–संघर्ष को अत्यंत सूक्ष्मता से देखा व जिया, जिसका स्पष्ट प्रभाव उनके कथा साहित्य में दिखता है। मटियानी ने जहाँ समाज में स्त्री की स्थिति, समस्या, व संघर्ष का यथार्थ चित्रण किया है तो वहीं दूसरी ओर दलितों की सामाजिक स्थिति व मानसिक कुंठा का आंकलन अनेक स्तरों पर किया है। अपने साहित्य में मटियानी ने भूख, गरीबी, जीवन संघर्ष आदि का संवेदनात्मक व भावनात्मक स्तर पर यथार्थ चित्रण किया है जो उनकी रचनाओं को सार्वदेशिक बनाती है।

## सन्दर्भ ग्रंथ

1. मटियानी, शुभा : हिन्दी के आंचालिक उपन्यासों का रचना विधान : हिमांचल प्रकाशन, हल्द्वानी : 1994 : पृष्ठ सं0 27

2. मटियानी, शैलेश : गोपुली गफूर उपन्यास : सरस्वती विहार शहादरा, दिल्ली : 1981 : पृ0 सं0 119
3. मटियानी, शैलेश : बोरीबली से बोरीबन्दर तक (उपन्यास), अनामिका प्रकाशन, इलाहाबाद–1959, पृ0 सं0 88
4. मटियानी, शैलेश : पापमुक्ति तथा अन्य कहानियां : सत्याहित्य प्रकाशन, दिल्ली : पृ0 सं0 72
5. मटियानी, शैलेश : नागवल्लरी उपन्यास : विभा प्रकाशन, इलाहाबाद 1985 : पृ0 सं0 11
6. मटियानी, शैलेश : पापमुक्ति तथा अन्य कहानियां, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली : पृ0 सं0 168
7. मटियानी, शैलेश : चौथी मुट्ठी उपन्यास : आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली : 1962 : पृ0 सं0 166
8. मटियानी, शैलेश : सुहागिनी तथा अन्य कहानियां : अनुभूति प्रकाशन, इलाहाबाद : 1989 : पृ0 सं0 52
9. मटियानी, शैलेश : शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानियां (भाग –1), प्रकल्प प्रकाशन, इलाहाबाद : 2004 : पृष्ठ सं0 155
10. मटियानी, शैलेश : चौथी मुट्ठी उपन्यास : आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली : 1962 : पृ0 सं0 126